व्यंग्य

हीनता का अतिराष्ट्रवाद

हरिशंकर परसाई

पलक मारते एक लाख के चैक की बात सारे शहर में फ़ैल गई। लोग चौराहों पर और होटलों में इसी की चर्चा करते रहे। सभी असंतुष्ट थे। कहते थे, 'सेठजी का अनाचार बढ़ता ही चला जा रहा है। वे दान की साधारण नैतिकता का पालन भी नहीं करते। वे क्या जनता को मूर्ख समझते हैं? जिस दिन जनता बिगड़ खड़ी होगी, उस दिन दान करना भूल जाएंगे?'

आज मुझे सरकारी तौर पर, अधिकृत रूप से यह बताया गया कि सूरदास महान कवि थे; और सन्त भी। एक मन्त्री ने सूर-पंचशती समारोह में यह शासकीय घोषणा की। अब मैं बेफिक्र हो गया। अत: बिना डर के सूरदास का नाम ले सकता हूं।

जब से इतिहास की कुछ किताबें प्रतिबन्धित हुई हैं, तब से मुझे लग रहा था कि दूसरी आजादी की सरकार, मान्यता-प्राप्त कवियों की सूची जारी करेगी। इन सरकारी कवियों के सिवा किसी दूसरे कवि को मनाने, पढ़ने-पढ़ाने पर प्रतिबन्ध लग जायेगा।

हीनता की भावना से जो कायर अतिराष्ट्रवाद इस देश में पैदा हुआ है, उसे हकीम वीरूमल तथा चांदनी चौक दिल्ली के हकीमों की जरूरत पड़ती है। इन राष्ट्रवादियों के लिए कवियों में चन्दबरदाई और भूषण जैसे कवि ही जरूरी है। 'आल्हा' दुनिया का सबसे महान महाकाव्य माना जायेगा। 'भैंसी ब्याई गढ महोवे में, पड़वा गिरो कनौजे जाव।'

और कालिदास? पढना-पढाना बन्द, वासना को उभारता है, जिससे राष्ट्रीय शक्ति क्षीण होती है। निराला और मुक्तिबोध! राष्ट्रद्रोही और कम्युनिष्ट मालूम होते हैं, और हमारी विराट बुद्धि की पकड़ में भी नहीं आते।

सूरदास को शासकीय मान्यता मिल गयी। बूढा अन्धा कृतार्थ हो गया। मन्त्री जी ने यह भी घोषणा की कि सूरदास सन्त थे। मैं तो उन्हें विलासी मानता था। वे लिखते हैं-

आज हरि नयन, उनींदे आये।
बिन गुन माल, पयोधर मुद्रा,
कंकन पीट गड़ाये।

कृष्ण कहीं रात गुजारकर आये हैं। आलिंगन के कारण वक्ष पर बिन धागे की माला के और उरोजों के निशान हैं, और पीठ पर कंगन गड़ने की छाप है। बताइये, विलासी नहीं तो और क्या?

पर मन्त्री ने घोषणा की कि वे सन्त थे। मैं मान गया। मानना पड़ा। मन्त्री ने सूरदास को सर्टिफिकेट दिया-मैं सूरदास को कई वर्षों से जानता हूं। वे महान कवि और सन्त हैं। जहां तक मेरी जानकारी है, इनका चाल-चलन अच्छा है। कृष्ण के दरबाद में, मैं इनकी नियुक्ति की सिफ़ारिश करता हूं।

अच्छा समारोह था। साहित्य के रसिक और जिज्ञासु तो कम ही थे। कुछ आचार्य थे, जिन्हें तबादले के बारे में बात-चीत करनी थी।

कुछ को अच्छी जगह तबादला कराना है। कुछ वे थे जो अदतन हें-हें वाले हैं। वे कांग्रेसी मन्त्री के पांवों को भी चिपटते थे, और जनता के मन्त्री के पांवों को भी लिपटते हैं। सरकारी अफ़सर और पुलिस वाले थे। पुलिसवाले परेशान थे। कहते होंगे- ये सूरदास, तुलसीदास वगैरह बहुत तंग करने लगे हैं। ड्यूटी लग जाती है। इन्हें तो दफ़ा एक सौ सात में डाल देना चाहिये। विद्वानों के भाषण भी बड़े ज्ञानवर्धक हुए।

मंच पर मन्त्री थे। विद्वानों को इस बात का ध्यान रखना जरूरी था। एक विद्वान को सूरदास के सन्दर्भ में भी आपातकाल याद आ गया। वे बोले, ''शासक वर्ग जब अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये आपातकाल की वायवीय स्थितियों को वास्तविक अथवा कानूनी स्वरूप प्रदान कर लोक को उत्पीड़ित करता है, तो क्रांति का शंखनाद गूंज उठता है।''

आचार्य का मतलब होगा कि सूरदास के समय मुगल शासकों ने 'इमरजेंसी' की बात करने लगते हैं। तब उसके समर्थन में बोलते थे, अब विरोध में बोलते हैं।

पर बाबू जगजीवनराम की तारीफ़ करूंगा। इमरजेंसी में हुए एक साहित्य-सममेलन में आयोजकों ने जगजीवनराम को बुला लिया। मुझे बुरा लगा। क्यों इस मन्त्री को लाद लिया? अब सुनो इनका आपातकाल और बीस-सूत्री भाषण।

पर जगजीवनराम लगभग सवा घण्टा केवल साहित्य और भाषाशास्त्र पर बोले, गहरे आचार्य की तरह।

उनके मुंह से आपातकाल और बीस-सूत्री कार्यक्रम एक बार फ़िर भी नहीं निकला। मजा यह है कि हम लेखकों में अनेक आपातकाल और वीस-सूत्री कार्यक्रम का उल्लेख करने से नहीं चूके।

आचार्यों की बात गूढ होती है। एक आचार्य ने कहा, ''उन्होंने (सूरदास ने)अपने युग की विलासिता, आलिंगन, चुम्बन, परिरम्भन, नखाघात आदि को कृष्णार्पित कर उसे पवित्र बना दिया और सम्पूर्ण हिन्दू जाति को सदैव के लिये पाप और हीनता की ग्रन्थि से मुक्त कर दिया।''

क्या अर्थ हुआ? यह कि चुम्बन-आलिंगन पाप है, पर कृष्ण को अर्पित करके यह करो तो वह पवित्र हो जाता है। ईसाई और मुसलमान कृष्ण को अर्पित करके चुम्बन-आलिंगन नहीं करते, इसलिए वह पाप हो जाता है।

हिन्दू यदि कृष्ण को अर्पित करके बलात्कार करे, तो क्या वह पवित्र है? और पुलिस उसे छोड़ देगी? फ़िर हीनता ग्रन्थि तो उसे होती है जो आलिंगन-चुम्बन नहीं कर सकता। उसे नहीं होती, जो करता है।

बात शुरू की थी मन्त्री से, और आ गया विद्वान पर-हालांकि उस समारोह में विद्वानों का नम्बर दसवां होगा। मुख्य अतिथि और सूरसाहित्य के माने हुए एक विद्वान का भाषण अखबार में पांच लाइनों में छपा, और मन्त्री का भाषण डेढ कॉलम में। विद्वान वहां आखिर क्यों जाते हैं, जहां कोई मन्त्री हो! शेर की बराबरी से बन्दर सरकस में क्यों बैठता है?

मैं यह नहीं कहता कि मन्त्री अयोग्य होते हैं। कतई नहीं। यह भी मानता हूं कि पद के कारण उन्हें कई जगह जाना पड़ता है, या वे खींचे जाते हैं, पर कई बार बड़ी अजब स्थिति पैदा हेती है।

एक बार निराला जयन्ती में एक मन्त्री ने कहा, ''अब निराला का शेष काम हम पूरा करेंगे।'' मैं तो घबरा गया। बाप रे। अगर ये निराला का शेष काम पूरा करने लगे तो क्या होगा? 'लाहौल विला कूवत!'

एक मन्त्री तुलसी जयन्ती पर बोल रहे थे। वे राम की महिमा बताने लगे-राम एक महान बाटनिस्ट (वनस्पतिशास्त्री) थे। अहिल्या एक फॉसिल (जीवाश्म) थी आजकल के बटानिस्ट तो फॉसिल का केवल अध्ययन करते हैं, पर राम ने उस फॉसिल को स्त्री बना दिया।

तीस सालों से मन्त्री लोग यही कर रहे हैं-उद्घाटन, विमोचन। पुल का उद्घाटन मन्त्री न करे तो वह गिर जाये। नहर का उद्घाटन मंत्री न करे तो वह सूख जाये। विज्ञान गोष्ठी का उद्घाटन मन्त्री न करे तो सारे वैज्ञानिक मूर्ख हो जायें। धोबी सम्मेलन का उद्घाटन मन्त्री न करे तो धोबी कपड़ा धोना भूल जाये। हालांकि रामकथाओं में इसका उल्लेख नहीं मिलता, पर मुझे विश्वास है कि राम ने लंका जाने को जो पुल बनवाया था, उसका उद्घाटन जरूर करवाया होगा।

मन्त्री यह काम करें, पर थोड़ा अदल-बदलकर किया करें।

पुल का उद्घाटन लोक-कर्म मन्त्री ही क्यों करें? पुल तो उन्हीं का बनवाया है। उन्हीं की प्रॉपर्टी है।

यह तो ऐसा ही हुआ कि कोई सेठ विधवाश्रम बनवाकर खुद उसका उद्घाटन करने लगे और कहे-मैंने जनता के लाभ के लिये यह विधवाश्रम बनवा दिया है। मैं चाहता हूं अधिक से अधिक स्त्रियां विधवा हों और इसका लाभ उठायें।

कांग्रेसी मन्त्रियों ने हर अवसर पर मुख्य अतिथि होने, उद्घाटन करने, आशीर्वाद देने का शुभ कार्य तीस साल किया। आखिर वे हूट होने लगे। जनता मन्त्री नये हैं। अभी चल जायेंगे। उनमें नये का उत्साह है। बाइज्जत बुलाये जाने का पहली बार उन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अभी तक तो चौराहे पर चिल्लाते थे कि यह सरकार भ्रष्ट है। अब मंच पर माला पहन कर बैठते हैं।

इनके हूट होने में देर लगेगी। देर हो, पर अन्धेर नहीं होगी। ये जरूर हूट होंगे। प्रक्रिया चालू हो गयी है। मुजफ़्फ़रपुर में जब लालकृष्ण अडवाणी टेलिविजन केन्द्र का उद्घाटन कर रहे थे, तब नारे लगे थे- टी.वी.नहीं, रोटी चाहिये!

अडवाणी को कह देना चाहिये था- सरकार आपकी मांग मंजूर करती है। टेलिविजन पर रोटी भी दिखायी जायेगी।

मज़दूर वर्ग की मुक्ति स्वयं मज़दूर वर्ग का कार्य है

एस.ई.शूज प्रा.लि. के मज़दूरों की समस्यायें

फ़रीदाबाद (म.मो.) एस.ई.शूज प्रा.लि. प्लॉट न. 67, सेक्टर 17 ए फ़रीदाबाद हरियाणा में स्थित है।

इस कम्पनी में लगभग 250 मज़दूर काम करते हैं। इस कम्पनी में मज़दूरों के साथ बहुत बुरा व्यवहार होता है। यहां के मैनेजर रमेश रावत मज़दूरों को हाथ पकड़कर और धक्का देकर बात करते हैं।

यहां जैसे ही लाइन पर माल का ढेर लग जाता है तो काम कर रहे मज़दूरों को सज़ा के बतौर स्टूल पर खड़ा कर दिया जाता है जैसे स्कूल में सज़ा के तौर पर मास्टर विद्यार्थी को बेंच पर खड़ा कर देते हैं। यहां पीने का पानी आर.ओ. का नहीं देते हैं बल्कि लाइन का पानी देते हैं जो कि गंदा होता है।अगर किसी मज़दूर को जरूरी काम पर जाये तो न कोई गेट पास और न ही हाफ़ डे और कभी-कभी 5:30 बजे भी नहीं जाने देते हैं। छुट्टी के समय जबरन ओवर टाइम पर रोक लेते हैं।

यहां बैठने के लिये स्टूल की कमी हमेशा बनी रहती है। स्टीचर के लिये छोटे स्कूल की कमी रहती है और हेल्पर छोटे स्टूल पर बैठा होता है तो हमारा मैनेजर रावत स्टूल लेकर स्टीचर को दे देता है और बड़े स्टूल हेल्पर को दे देता है। जो बड़े स्टूल हैं उस पर बैठ कर काम करने में दिक्कत होती है।

यहां टॉयलेट और वाशरूम के लिये पास सिस्टम बनाया है जैसे हर लाईन में मात्र 1 पास सुपरवाइजर के पास रहता है। प्रत्येक लाइन में 30 मज़दूर हैं। ऐसे में मज़दूरों को काफ़ी दिक्कत का सामना करना पड़ता है। एक टाईम में तीन मज़दूरों को इमरजेन्सी है तो एक ही मज़दूर जायेगा वो आयेगा तो दूसरा जायेगा। इस सिस्टम से एस.ई.शूज के मज़दूर ज़्यादा परेशान है।

यहां पर मज़दूर अगर सैलरी वाले दिन किसी कारण से नहीं आ पाता है तो 15 तारीख को सैलरी देते हैं और पे स्लिप नहीं देते हैं।

यहां सैलरी का जो पे स्लिप देते हैं उसमें सारा कुछ होता है लेकिन ओवर टाइम नहीं दिखाया होता है। यहां ओवर टाइम सिंगल देते हैं। यहां पर हर 9 महीने पर ब्रेक का सिस्टम बना रखा है कभी-कभी 9 महीने से पहले भी ब्रेक कर देते हैं। जब यहां पर किसी का ब्रेक होता है तो उन मज़दूरों को कच्चे रजिस्टर पर रख लेते हैं। उन्हें कोई ई.एस.आई., पी.एफ़. नहीं मिलता है।

अभी हमारे यहां एक नया नियम लागू किया गया है कि काम शुरू करने से पहले एक प्रार्थना करवाते हैं जिसमें मज़दूरों से प्रतिज्ञा करवाते हैं कि हम मज़दूर ईमानदारी से काम करेंगे, कम्पनी का नुकसान नहीं होने देंगे, हमेशा कम्पनीं के नियमों का पालन करेंगे और अपनी मेहनत और लगन से कम्पनी का विकास करेंगे। लेकिन इन कम्पनी वालों की ईमानदारी देखो-

1. न तो ये कानूनन डबल ओवरटाइम देते हैं न ही 240 दिन होने पर कानूनन नौकरी पर स्थायी करते हैं। इसके अलावा कच्चे रजिस्टर पर रखकर बहुत से मज़दूरों का भयंकर शोषण करते हैं।

2. ना ही मज़दूरों से तमीज से बात करते हैं।

3. यहां का मैनेजर रमेश रावत मज़दूरों से गाली से बात करता है।

आजकल हमारी कम्पनी में एक बोर्ड पर आज का विचार लिखकर तरह-तरह के विचार लिखते रहते हैं कि ये सोच होनी चाहिए, वो सोच होनी चाहिए। जितना भी स्टाफ़ है उनमें इन विचारों का कोई अंश भी नज़र नहीं आता है।

कम्पनी छोड़ने या कम्पनी से ब्रेक देने के बाद पी.एफ़ के फ़ार्म भरने में काफ़ी लम्बा समय लेते हैं ताकि मज़दूरों को दिक्कत का सामना करना पड़े। 3-4 महीने हो जाते हैं फ़िर भी फ़ार्म भरके नहीं देते। इसमें कम्पनी में बदमाशी बहुत ज़्यादा है।

-एक मज़दूर फ़रीदाबाद

मैं फ्री सेक्स के पक्ष में हूँ

मैं फ्री सेक्स के पक्ष में हूँ,
फ्री सेक्स का मतलब क्या है ?
कुछ लोग समझते हैं फ्री मतलब मुफ्त में सेक्स,
लेकिन ऐसा वे बेचारे अंग्रेज़ी भाषा ना जानने की वजह से समझते हैं,
कुछ लोग फ्री सेक्स का मतलब समझते हैं जहाँ चाहा जिसके साथ चाहा सेक्स कर लेने को फ्री सेक्स कहते हैं,
इन लोगों की समझ भी दूषित है इसलिए वे ऐसा समझते हैं,
फ्री सेक्स का मतलब है हर इंसान को अपने शरीर पर अपना अधिकार होने को मान्यता देना,
भारत में ऐसा नहीं है,
ख़ास तौर पर औरतों के शरीर पर पुरुषों का अधिकार है,
लडकी किसके साथ शादी करके सेक्स करेगी यह पिता तय करता है,
लडकी को अपनी शादी, कब करनी है, किसके साथ करनी है, करनी है या नहीं करनी यह सब फैसले लेने के अधिकार को मान्यता देना ही फ्री सेक्स को मान्यता देना कहलाता है,
लेकिन भारतीय समाज के सारे नियम पुरुषों के पक्ष में बनाये गए हैं,
इसलिए जैसे ही कोई फ्री सेक्स की बात कहता है पुरुषों के दिमाग में खतरे की घंटी बजने लगती है कि हमारा अधिकार समाप्त होने वाला है,
इसलिए भारत का पिछड़ा पुरुषवादी समाज फटाफट अपने पक्ष में सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति, परम्पराओं की दुहाइयां देने लगता है,
फ्री सेक्स एक लोकतान्त्रिक मूल्य है,
हम लोग अभी असल में लोकतान्त्रिक बने नहीं हैं खाली दिखावा करते हैं,
अगर आप मानते हैं कि हर बालिग़ व्यक्ति वोट दे सकता है वो एक बालिग़ लडकी अपनी शादी का फैसला क्यों नहीं ले सकती ?
लडकी के अपने फैसले लेते ही आपका सनातन क्यों खतरे में पड़ जाता है
वैसे तो कहने के लिए भारत के महाकाव्यों में फ्री सेक्स की कहानियां भरी पड़ी हैं,
स्वयंवर का अर्थ ही अपनी मर्जी से वर खोजना होता है,
तो फ्री का अर्थ है स्वतन्त्रता और सेक्स का अर्थ है अपने शरीर, प्रजनन और शादी के बारे में स्वतंत्र इंसान के रूप में फैसले लेने की आज़ादी का अधिकार, हर इंसान को सेक्स के बारे में फैसला लेने का अधिकार होना ही हमारे समाज के सभ्य होने की निशानी है,
दुसरे को अपना गुलाम बना कर उसे फैसला ना लेने देना पिछड़ापन है,
लड़कियों को अपने फैसले लेने दीजिये, आप कब तक उनके सर पर बैठे रहेंगे ?

- हिमांशु कुमार